रचनात्मकता के सागर शिव

धरती मां की पुकार ''मेक मी हेविन,, ऐसे समय पर सुनी गई जिस समय का सृष्टि चक्र में विशिष्ठ महत्तव है। अनवरत चल रहे समय के चक्र में यह सृष्टि अपनी भिन्न- भिन्न अवस्थाओ के कारण धर्म की भाषा में अपनी चार अवस्थाओ से गुजरती है। ये अवस्थाएं है सत, रज, तम और तमोप्रधान। अपनी इन्ही अवस्थाओ के कारण यह सृष्टि चक्र चार युगों में बंटा हुआ है। जिन्हे क्रमश: सतयुग, त्रेतायुग, द्वापरयुग तथा कलियुग के नाम से जाना जाता है। लेकिन हम जिस विशिष्ट समय की बात कर रहें है, वह है पुरुषोत्तम संगम युग। पुरुषोत्तम संगम युग अन्य युगो की आयु की तुलना में बहुत छोटा युग होता है। सृष्टि चक्र में कलियुग अन्त तथा सतयुग आदि के बीच की यह छोटी सी अवधि अपने काल मे हुए परिवर्तनों के कारण पूरे ही कल्प में विशिष्ट स्थान रखती है।

धरती मां की आवाज ''मेक मी हेविन,, को पूरा करने का कार्य भी इसी पुरुषोत्तम संगम युग पर पूर्ण होता है। आज जबकि यह पृथ्वी ग्रह विकट समस्याओ से घिरा हुआ है और इन सभी समस्याओ के कारण रुप में पृथ्वी पर रह रहे मनुष्य प्राणीयो में विकार व विकृतियां है। मनुष्य स्वभाव से इतना स्वार्थी है और ऐसे में विकारो एवं विकृतियों के प्रभाव ने उसे पूर्ण रुपेण स्वार्थी बना दिया है। धरती मां की आवाज को परमार्थी ही सुन सकते है। और परमार्थी ही उस आवाज को पूरा कर सकते है। परमात्मा जो परमपुरुष है वे ही पूर्ण परमार्थी है। वे सृष्टि के नियन्ता कहे जाते हैं। यहां तक कि ब्रह्मा, विष्णु तथा शंकर के भी रचयिता कहे जाते है। वे ही सच्चे अर्थो में विश्व परिवर्तक है, इसलिए ही उन्हें शिव कहा जाता है, क्योंकि विश्व कल्याण का कार्य वे ही करते है। वे मनुष्य आत्माओ तथा प्रकृति दोंनो ही के परिवर्तक है। वे ही इनकी तमोप्रधान अवस्थाओं का परिवर्तन कर सतोप्रधान बनाते है। वे रचनाकार भी है तो रचनात्मकता के सागर भी है। अदभुत सृष्टि में विविधता, आकर्षण, कल्याण, कर्तव्य निष्ठा ये सब जो दृष्टि गोचर होता है वह परमात्मा पिता की रचनात्मकता का कमाल है। वे ही सही मायने में धरती मां की आवाज को सुनते है और पृथ्वी ग्रह पर रह रहे मनुष्य जीवों मे इस आवाज को सुनने की क्षमता विकसित करते है। धरती के स्वरुप को स्वर्गिक स्वरुप देने लिए अथवा वर्तमान विश्व के कल्याण के लिए वे अपनी रचनात्मकता का उपयोग कर पुरुषोत्तम संगमयुग रचते है।

सृष्टि परिवर्तन के इस महान अदभुत अलौकिक कार्य के लिए चाँद तारागण से उपर सूक्ष्म लोक की रचना रचते है। श्री कृष्ण के अन्तिम जन्म में पार्ट बजा रही आत्मा दादा लेखराज कृपलानी को एडाप्ट कर उन्हें प्रजापिता बह्मा नाम देते है और उनके माध्यम से प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय मुख्यालय माउण्ट आबू, राजस्थान, भारत से विश्व में परिवर्तन का आगाज करते है। पूरे विश्व में फैले इस आध्यात्मिक संगठन में वे अपनी रचनात्मकता का ऐसा उपयोग करते है कि नर- नारी देव- देवी बनने के पथ पर अग्रसर होते है। वे स्वार्थी मानव को परमार्थ का ऐसा पाठ पढ़ाते है कि इस विश्व विद्यालय के माध्यम से नर नारी अपनी क्षमताओ का, अपने साधनों का उपयोग धरती मां को स्वर्ग बनाने में उपयोग करते है।

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्याालय द्वारा धरती मां विश्व को स्वर्ग, मानव को देव बनाने की इस सेवा को वे ईश्वरीय सेवा का नाम देते है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय द्वारा विश्व कल्याण के लिए हो रही ईश्वरीय सेवायें रचनात्मकता के सागर शिव की तरफ ध्यान खिंचवाती है। नित नये प्रोजेक्ट जो विश्व कल्याण के लिए चलाये जाते है, उनमें रचनात्मकता इस कदर समायी होती है जैसे लगता है हर कार्यकर्ता ईश्वर से जुड़ कर उसकी रचनात्मकता का इस्तेमाल कर रहा है। इस आध्यात्मिक संस्था के विश्व व्यापी नेटवर्क की चाहे छोटे से ग्राम में होने वाली गतिविधियां हो अथावा वैश्विक स्तर पर बड़े-बड़े सामुहिक आयोजन सभी में रचनात्मकता स्पष्ट

झलकती है। अपनी इसी रचनात्मकता की उपयोगिता के कारण देखने में आया है संस्था के कार्यो में नित नयी तेजी आ रही है। इसके कार्य कर्ताओ में कर्म क्षेत्र पर उत्साह स्पष्ट देखने में आता है। वे सदा ही उनमें सतत् प्रवाहित हो रही रचनात्मकता की शक्ति से लबरेज नजर आते है। ऐसे महान संगठन से हम सभी को एक संदेश मिलता है, कि आओ हम सब भी धरती मां को स्वर्ग बनाने के इस परम पुनीत कर्तव्य में जुड़ जाये। प्रजापिता बंह्मा कुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय के रुप में स्थापित प्लेट फार्म का उपयोग करते हुए धरती मां की आवाज मेक मी हेविन को पूरा करने में लग जाये। रचनात्मकता के सागर शिव से रचनात्मकता को ग्रहण कर विश्व के कल्याण में उसे लगाये। स्वयं को शिव समान बनाये। धरती मां की आवाज मेक मी हेविन को पूरा कर उसके दिल की दुआएं ले स्वयं को सुखी बनायें।

आने वाले कल को हम अपने आज में रचायें

''मेक मी हेविन,, कि ये आवाज जो अब चारो ओर गूँज रही है। ये आवाज जो अपने आपको पूरा होते देखने के लिए लालायित है। जनमानस के अन्त: करण को जगा रही है। वह स्वर्ग कैसा होगा जिसका ये आवाज आहवान कर रही है। यह धरती स्वर्ग के उस रुप को धारण किये हुए होगी जिस रुप को यह आवाज अपने आप में समेटे हुए है। नर नारी इस स्वर्ग में पार्ट धारी होंगे जो इसके साक्षात दृष्टा होंगे। यह स्वर्ग जब होगा तब तो वे देखेंगे जो इसमें होंगे। लेकिन हम आज है अब ही केवल हमारा है यदि हम भी इस हेविन को देखना चाहते है तो जगायें अपनी रचनात्मकता को। जो अपनी रचनात्मकता की शक्ति जाग्रत कर आज स्वर्ग देखेंगे और वैसा बनाने के लिए जुटेंगे यही स्वर्ग वे देखेंगे जो कल उसमें होंगे। जिसके हम स्वयं साक्षी रहे हो वह आज हमसे छुपा नही रह सकता है। तो चले हम सब मिलकर स्वर्ग में। स्वर्ग मे भगवान तो हमारे साथ नहीं होगे पर आज वे उस हेविन के रचता है जो धरती मां पुकार रही है। तो क्यों न हम उन्हीं के साथ स्वर्ग में विचरण करे। एक ऐसी भासना ईश्वर अपनी सर्व श्रेष्ठ रचना देवी देवताओ के साथ स्वर्ग में विचरण कर रहे है नयना भी राम हो उस स्वर्ग का अवलोकन कर रहे है जिस कलेवर को यह धरती मां शीध्र ही धारण करने वाली है।

जिस स्वर्ग को यह धरती मां पुकार रही है वह इसके लिए सुखकारी है। धरती मां के साथ- साथ इस पृथ्वी ग्रह पर रहने लिए सभी जीवों के लिए हितकारी एवं सुखकारी है। जिस स्वर्ग का यह मां वरण करना चाह रही है वह पर्यावरण की बेहतरी का नायब नमूना है। नदियों में बहते जल की धारा अमृत तुल्य है उसकी शीतलता व निर्मलता का आकर्षण मानव मन मे रचा बसा है वास्तव मे तो यह

मानव मन मे समायी निर्मलता, स्वच्छता का प्रतिबिम्ब है, जो मानव मे है, प्रकृति ने उसे धारण किया हुआ है। यही स्वर्ग की वास्तविकता है। वहां की प्रकृति का व्यवस्थित रुप प्रकृति की स्वयं की स्वयं मे व्यवस्था का परिणाम है और इस परिणाम के पीछे भी वहां रह रहे मनुष्यों का व्यवस्थित जीवन है। मनुष्य के व्यवस्थित जीवन का स्वमेव सूक्ष्म प्रभाव प्रकृति को व्यवस्थित बनाये हुए है। जिस प्रकार मनुष्य अपनी स्वयं की व्यवस्था के कारण अपने आचरण मे श्रेष्ठ रहता है इसी प्रकार यही श्रेष्ठता प्रकृति मे झलकती है। वहां के वृक्षो की पृथ्वी के वक्ष पर व्यवस्था अपने मनमोहक रुप से हर किसी को आकर्षित करती है। सदा ही फूलो एवं फलो से आच्छादित प्रकृति अपनी स्वमेव रचनात्मकता का दर्शन कराती है। वहां स्वर्ग में निवास करने वाले मनुष्यों ने स्वर्ग की रचना मे जो अपनी रचनात्मकता का इस्तेमाल किया था, उनके इसी

रचनात्मकता के स्वभाव को प्रकृति ने धारण कर नाना मन भावन रुपो को, सुखकारी रुपो को, कल्याणकारी रुपो को मानव के समक्ष प्रस्तुत किया है। प्रकृति एवं मानवीय स्वभाव कि निकटता का सुन्दरतम नमूना स्वर्ग है। मानव के इस दैवी स्वभाव से सम्पन्न व प्रकृति के मानवीय दैवी स्वभाव को धारण किये हुए रुप को पाने के लिए ही धरती मां लालायित है। जो इसका कल था वैसा आज पाने के लिए ही इसकी पुकार है मेक मी हेविन। चाहे प्रकृति की परस्पर व्यवस्थायें हो अथवा मानवो की बीच परस्पर व्यवस्थाये हो ये दोनो ही एक दो की सहयोगी है ये एक दो के लिए कल्याणमयी, हितकारी, सुखकारी है।

स्वर्ग के इस स्वरुप में सम्पूर्णता है कही कुछ ओर करने की, कुछ और होने की गुंजाईश दिखाई नही देती है। रचनात्मकता के सम्पूर्ण उपयोग का परिणाम ही ये स्वर्ग है। स्वयं परमात्मा तथा आदि देव ब्रह्मा एवं ब्रह्मा वत्सो, ब्रह्माकुमार ब्रह्माकुमारियों एवं ईश्वर के अनेक सहयोगी आत्माओ, प्रकृति प्रेमियों तथा, पर्यावरण प्रेमियो, स्वर्ग की सुन्दरतम रचना मे किसी भी रिती से हाथ बढ़ाने वाली कोटि-कोटि आत्माओ तथा उनके अपने स्तर पर अपनी पूर्ण रचनात्मकता के उपयोग का परिणाम ही स्वर्ग है। इस स्वर्ग के लिए आज हो रहे प्रयासो का कल ये फल है। जो इन प्रयासो में रत है उन्हे परिणाम मे प्राप्त आनन्द कल के स्वर्ग से भी बढ़कर है। तो आओं हम धरती मां की पुकार ''मेक मी हेविन,, को पूरा करने के लिए अपने रचनात्मक प्रयासो से अपने आज को आनन्द पूर्ण बनाये। आनन्द के इस सतत् प्रवाह से धरती को स्वर्ग बनाये। स्वर्ग के सुखो से भी बढ़कर परमात्मा के साथ के अनुभव से रचनात्मकता के सागर से स्वयं को भरपूर बनाये। आने वाले कल को हम अपने आज मे रचाये।

हमारा कल स्वर्ग है। यह स्वर्ग मानव की कलाओ, शक्तियों, ज्ञान गुणों व विज्ञान के उपयोग का सर्वश्रेष्ठ स्वरुप है। उस युग मे जिसे सतयुग कहा जाता है तथा उसके व्यवहारिक स्वरुप को स्वर्ग वहां मानव ने जीनव के सत्य को सही से समझा था। अपनी इसी सत्य समझ के आधार से उसने प्रकृति का ऐसा उपयोग किया जो प्रकृति के स्वयं के लिए तथा मानव के लिए कल्याणकारी रहा। अपनी इसी विशेषता के कारण वहां की सभ्यता दैवी सभ्यता कहलाई। वहां के इन्सान ने तथा प्रकृति की शक्ति ने अपनी क्षमता का उपयोग, अपनी रचनात्मकता का उपयोग सर्वहित में किया। रचनात्मकता का कोई भी कही भी ऐसा रुप वहां नही था जो मानव, जीव, प्रकृति अथवा समय के हित मे न हो। वहां के मानव ने अपनी क्षमता का अपनी रचनात्मकता का उपयोग सदा इस बात को ध्यान मे रख कर किया कि आने वाली पीढ़ी पर इसका क्या प्रभाव होगा। उन्होने अपने आज के लिए आगे आने वाली पीढ़ी के आज अथवा अपने कल को कभी कलुषित करने वाला कदम नहीं उठाया। मानव के इस सोच एवं व्यवहार के ही कारण वहां मानव तथा प्रकृति व मानव तथा सभी प्राणियों के बीच प्रेम व सत्कार का वातावरण रहा। अपनी इन्हीं विशेषताओं के कारण ईश्वर तथा इन्सान की रचनात्मकता के उपयोग का बेहतर रुप वहां देखने मे आया। इसी लिए वह रचना स्वर्ग कहलाई। वह युग सतयुग कहलाया। मनुष्य देव व प्रकृति दाता कहलायी। तो आओ हम सभी प्रकृति ग्रह के वासी अपनी रचनात्मकता का उपयोग ईश्वर के साथ जुड़कर विश्व को स्वर्ग बनाने मे लगाये और अपने कल के भविष्य को आज मे बसाये।

Creativity creates energy
रचनात्मकता ऊर्जा के उपयोग एवं निर्माण का सशक्त माध्यम

मेक मी हेविन यह आवज जो लोगो के कानो मे गूँज रही है इसे पूरा करना इतना आसान नहीं हैं, हर कोई ऐसा समझ इस आवाज के साथ अपनी टयूनिंग नही कर पा रहा था। यह हर कोई जानता है समान्य से कार्य करने के लिए भी ऊर्जा खर्च होती है। आज विश्व की जरुरतो को पूरा करने के लिए ऊर्जा का बड़ा संकट है। ऊर्जा के संकट काल में पूरे विश्व को स्वर्ग बनाने का कार्य विराट अक्षय ऊर्जा भण्डारो से ही सम्भव है। विश्व को स्वर्गिक रुप देने के लिए महान परिवर्तनों की जरुरत है। हर कोई जानता है सामान्य से

परिवर्तन भी ऊर्जा की खपत से ही सम्भव होते है। आज विश्व में मात्र इतने से कार्य, की अंधेरे के समय प्रकाश का वातावरण बनाने के लिए विश्व की ऊर्जा का लगभग 30 प्रतिशत तो इसी मे खर्च हो जाता है। जब हम धरती को स्वर्ग बनाने की बात कर रहे है तो वहाँ न केवल अंधकार को प्रकाश में तब्दील करना है बल्कि मनुष्यों के मन मे छाये अज्ञान अंधकार हटाये बिना धरती को स्वर्ग बनाने की बात ही बेमानी है।

स्वर्ग जहाँ सब कुछ बदला हुआ है वह रचनात्मकता के उपयोग का परिणाम है। वास्तव में रचनात्मकता का उपयोग ही ऊर्जा के निर्माण का सशक्त माध्यम है। अत: धरती को स्वर्ग बनाने के महान कार्य मे रचनात्मकता ही ऊर्जा का वो अक्षय भण्डार है जो मानव मन की गहराईयों मे समाया हुआ है। यह रचनात्मकता जो अपने मे ऊर्जा भी है, अपने उपयोग से जीवन मे यह आनन्द का सृजन करके मनुष्य को वह आवश्यक ऊर्जा प्रदान करती है जो स्वर्ग के निर्माण मे मानव को अथक हो लगाये रखने के लिए जरुरी है। यह वो ऊर्जा है जिसका संसार मे अनयत्र कोई स्त्रोत नहीं है। यदि इस ऊर्जा का अन्य कोई स्त्रोत है तो वह है प्रभु प्रीत। परमात्मा से जब प्रीत मे मानव मन विभोर हो जाता है तब भी वह इस आनन्द की प्राप्ति करता है। इसी आनन्द का वह विश्व कल्याण मे विकिरण करता है। इस प्रकार प्राप्त हुई यह आनन्द की ऊर्जा भी हमें विश्व कल्याण के साथ जोड़ती है यहां से भी धरती को स्वर्ग बनाने का मार्ग मिलता है। रचनाकार प्रभु से जब मानव जुड़ता है तो प्रभु आनन्द विभोर हुए अपने प्रिय मानव को अपनी रचना से जोड़ देते है उसमें प्रभु के प्यार के साथ – साथ वह ईश्वर की रचना के प्रति भी प्यार विकसित कर देते हैं। रचना से प्यार माना धरती मां की आवाज मेक मी हेविन से प्यार। इस प्रकार प्रभु प्रेम मे आनन्द विभोर हुआ साधक अपने कर्तव्य पथ की ओर बढ़ता है। इसी कर्तव्य पथ पर उसे रचनात्मकता की जरुरत पड़ती है। जिसके आधार से ईश्वर के कर्तव्य व धरती मां की आवाज को पूरा करने में वह रचनात्मकता का उपयोग करता है।

संसार मे लिप्त मनुष्यों व संसार से निर्लिप्त साधको को इस बात को अच्छी तरह समझ लेना चाहिये कि जिस आनन्द के लिए संसारी पुरुप संसार मे फंसता जाता है तथा जिस आनन्द के लिए साधु संसार से निर्लिप्त होता जाता है उन दोनो ही के लिए ईश्वर का कर्तव्य पथ वो सीढ़ी है जो उन्हे उनकी मन्सा के साथ जोड़ती है। संसारी मनुष्य आनन्द प्राप्ति के लिए रचनात्मकता के अति दोहन के बाद भी आनन्द को प्राप्त नहीं कर पाता और साधक आनन्द मे विचरण करते हुए भी परमात्मा को प्राप्त नही हो पाता। इन दोनो के लिए विडक्बना इस बात की है कि संसारी मात्र ईश्वर रचना से जुड़ता है और साधक मात्र ईश्वर से जुड़ता है। दोनो के लक्ष्यों की पूर्णता इसी मे है कि वे ईश्वर व उसकी रचना से साथ - साथ जुड़े। साथ- साथ जुड़ने से ही रचनात्मकता का सदुपयोग होगा। यह उपयोग आनन्द का सृजन करेगा। यह आनन्द लक्ष्य के साथ- साथ कल्याण से जुड़ा है अत: यह स्थायी होगा।

वे लोग जो संसार को कुछ देना चाहते है चाहे वे अपनी नेतृत्व क्षमता से दे, अपनी समाज सेवा से दे, अपनी वैज्ञाानिक क्षमताओ से दे अथवा किसी भी क्षेत्र के माध्यम से दे उन्हे यह बात भली भांति अपने अन्त:करण मे समा लेनी चाहिये कि विश्व को स्वर्ग रुप देने के लिए जिस चीज की खास जरुरत है अथवा जिस ऊर्जा की खास जरुरत है तो वह है ही रचनात्मकता। इस बात को हमें इस रिति भी अच्छी तरह समझ लेना है। आज तक इसी कलिकाल मे जब भी हमने अपनी रचनात्मकता का उपयोग किया है हम सीमाओं से वंधे रहें है चाहे वे व्यक्तिगत रही हो, संस्था गत रही हो, क्षेत्र अथवा राष्ट्र के सम्बन्ध मे रही हो। रचनात्मकता के इस संकीर्ण उपयोग से स्वर्ग धरती पर सम्भव नहीं है। रचनात्मकता का इस प्रकार उपयोग हमें विध्वंस की ओर ले जा रहा है। हमारे इस अक्षय ऊर्जा भण्डार का दुरुपयोग करा रहा है। अत: मानवता के प्रमियों, ईश्वर प्रेमियो, प्रर्यावरण प्रेमियो, देश प्रेमियों, विज्ञान प्रेमियो, सेवा प्रेमियो, क्षेत्र प्रेमियो, भाषा प्रेमियो, परस्पर प्रेमियो लक्ष्य प्रेमियो जागो, उठो और निश्चित करो कि हम रचनात्मकता का उपयोग धरती को स्वर्ग बनाने मे करेंगे। अनवरत ऊर्जा पैदा करने के इस सशक्त माध्यम रचनात्मकता का उपयोग इस विश्व के हित मे करेंगे, आने वाली पीढ़ी के हित में करेंगे। तो आओ ऐसा कर हम स्वयं को प्रकाशित करे, अपनी रचनात्मकता की शक्ति को प्रकाशित करे तथा इसके सदुपयोग से अनवरत ऊर्जा का निर्माण कर धरती मां की दुंआएं, ईश्वर का आर्शिवाद व जड़ चेतन की दुआए प्राप्त कर स्वयं व सर्व का मंगल करे। रचनात्मकता रुपी ऊर्जा के इस अक्षय भण्डार का सदुपयोग एवं निर्माण साथ-साथ करें।

बी.के सुधीर
शांतिवन